E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2022; 4(3): 215-219
Received: 12-08-2022
Accepted: 13-09-2022

शत्रुघ्न राऊत
शिक्षकेत्तर कर्मचारी, चतुर्थ वर्गीयकर्मी, कुँवर सिंह महाविद्यालय, लहेरियासराय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
शत्रुघ्न राऊत
शिक्षकेत्तर कर्मचारी, चतुर्थ वर्गीयकर्मी, कुँवर सिंह महाविद्यालय, लहेरियासराय, दरभंगा, बिहार, भारत

बिहार के सामाजिक विकास में सूचना एवं प्रौद्योगिकी की भूमिका

शत्रुघ्न राऊत

सारांश :
नए-नए आविष्कार एवं खोज के फलस्वरूप हमारे समाज में इतने महत्त्वपूर्ण विकास हुए है कि इसे एक क्रांति का नाम दिया जाता है। फलतः वर्तमान युग को विज्ञान का युग कहा जाता है। वैज्ञानिकरण ने न केवल सामाजिक संगठन कोही नया रूप दिया है बल्कि आर्थिक संरचनाओं के प्राचीन स्वरूपों एवं प्राचीन विचारधाराओं का भी धीरे-धीरे अवमूल्यन कर दिया है। आर्जन के अनुसार, विज्ञान हमारे पर्यावरण के परिवर्तन के फलस्वरूप हमारे अनुकूलन को सहज बनाती है यह परिवर्तन प्रायः भौतिक पर्यावरण में आता है तथा हम इन परिवर्तनों के साथ जो अनुकूलन करते हैं, उससे प्रथाओं एवं सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन हो जाता है। "यह सच है कि विज्ञान में हमें आधुनिकीकरण के सभी साधन प्रदान किए हैं जिनका मनुष्य अपनी आवश्यकतानुसार प्रयोग करता है। परन्तु संसात्मक विज्ञान कभी-कभी विनाश का पर्याय भी बन जाता है।

संचार के नए साधन एक महत्त्वपूर्ण प्रौद्योगिक कारक हैं जिसने अत्यधिक तेजी से सामाजिक परिवर्तन की दशा उत्पन्न की है। संचार की अनेक प्रविधियों (जैसे रेडियों, टेलीविजन, टेलीफोन तथा तार व्यवस्था) ने हमारे जीवन को कहीं अधिक गतिशील बना दिया है। इसने स्थानीय दूरी को इतना कम कर दिया है कि एक स्थान के विचारों को हजारों मील दूर तक कुछ क्षणों के अन्दर ही सुना जा सकता है। फलस्वरूप विभिन्न संस्कृतियों की विशेषताओं का एक-दूसरे से निरन्तर मिश्रण हो रहा है। इस प्रकार संचार के साधनों में होने वाली प्रत्येक उन्नति सात्मीकरण और एकीकरण की प्रक्रिया को और अधिक तीव्र कर देती है। रेडियों ने ग्रामीण और नगरीय समुदायों के बीच के अन्तर को कम करने में अत्यधिक योग दिया है, राजनीतिक जीवन का विस्तार किया है तथा सामाजिक सम्बन्धों के रूढ़िगत तत्वों को निकाल फेंकने में समाज की सहायता की है। चलचित्रों ने हमारे सामाजिक जीवन को जो नया रूप दिया है उससे सभी व्यक्ति परिचित हैं। इससे हमारी वेश-भूषा और रहन-सहन का स्तर ही प्रभावित नहीं हुआ बल्कि मनोवृत्तियों और विचारों तक में परिवर्तन हो गया है। स्त्रियों की स्थिति को ऊँचा उठाने में भी इसका योगदान कम नहीं है। संसार की प्रविधियों ने सामाजिक नियन्त्रण को भी पहले से अधिक प्रभावपूर्ण बना दिया है।

कूट शब्द: रेडियों, टेलीविजन, टेलीफोन तथा तार व्यवस्था

प्रस्तावना
प्रौद्योगिकी हमारी वर्तमान जीवन शैली को प्रभावशाली ढंग से प्रभावित करती है यह असंदिग्ध है। हमारे जीवन की पद्धतियाँ, विचारधारायें और हमारी सामाजिक संस्थायें यांत्रिकीकरण से बहुत गहरे रूप में प्रभावित हैं। आधुनिक सभ्यतायें तकनीकी आधार के अभाव में विकसित नहीं

होती। यद्यपि तकनीकी और वैज्ञानिक विकास ने मनुष्य को बहुत ज्यादा लाभ प्रदान किये हैं पर इसने उसके सामने बहुत सारी समस्यायें भी खड़ी की हैं। उदाहरण के लिए जब इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति हुई, तो इसने उत्पादन के विकास को बहुत तेज किया, परन्तु साथ ही इसने नारी और पुरुष को, विशेषकर पुरुष को कई घंटों तक घर से बाहर रहने को विवश किया और इससे वे समस्यायें पैदा हुई जिनको जानकारी पहले से नहीं थी। इसी प्रकार परमाणु शक्ति के विकास ने मनुष्य को शक्ति दी कि वह इस तरह की गरीबी का उन्मूलन करे और साथ ही सभी प्रकार के मानवीय जीवन का नाश करे। वस्तुतः तकनीकी परिवर्तन के बाद दूरगामी सामाजिक परिवर्तन होते हैं। हम उन प्रभावों पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार कर सकते हैं।

यंत्रों के बढ़ते और लगातार प्रयोग ने आश्चर्यजनक रूप से श्रम की उत्पादकता को बढ़ाया है यानी प्रति मनुष्य प्रति घंटा उत्पादन अद्भुत तीव्रता से बढ़ा है। यह औद्योगिक श्रमिक और खेतिहर श्रमिक दोनों के लिए सत्य हैं। इस प्रकार वस्तुओं की ज्यादा मात्रा अब उपलब्ध हैं। सभी तकनीकी आविष्कारों के लिए इनके दो उद्देश्य हैं या तो वे बिल्कुल मानवीय इच्छाओं और आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष संतुष्टि के लिए नये उत्पादन की रचना करना चाहेंगे या फिर उनका उद्देश्य परिचित उत्पादों को ही ज्यादा कुशलता से उत्पादित करना होगा। इस प्रकार तकनीक नयी प्रकार की वस्तुएँ और ज्यादा मात्रा में वस्तुएं प्रदान कर हमारी खुशी को बढ़ाती है और हमारे जीवन स्तर को ऊँचा उठाती है।

आधुनिक तकनीक ने बहुत सारी ऐसी नौकरियों को जन्म दिया है जो विशेष कुशलता और ज्ञान की मांगो करती है। इस प्रकार ‘‘अभियंता, जो यंत्रों ओर कारखानों के नक्शे बनाते हैं, कुशल निर्माण मजदूर, नलसाज, बिजली मिस्त्री और यंत्रविदों व यंत्र मिस्त्रियों के बहुत सारे प्रकार है जो यंत्रों को बनाने, चलाने और ठीक करने में लगे हैं।” ऐसे भी व्यक्ति हैं जो औद्योगिक उद्यमों के संगठन और प्रशासन, विज्ञापन और बिक्री, हिसाब-किताब रखने आदि में विशेष रूप से कुशल हैं। दूसरे शब्दों में तकनीक ने पुरानी बंद सामाजिक व्यवस्था के स्थान पर नये पेशेवर वर्गों और एक नई खुली वर्ग संरचना को पैदा किया है। आधुनिक तकनीक ने अनेक तरीकों से मानवीय जीवन की गति को आगे बढ़ाया है। उदाहरण के लिए हम निम्नलिखित कारणों पर विचार कर सकते हैं जिन्होंने जीवन स्तर की सामान्य गति को तेज करने में मदद की है- ‘‘पर्याप्त कृत्रिम प्रकाश के अभाव ने बहुत सारी परियोजनाओं को दिन में ही काम करने को बाध्य किया। अब वे रात में भी किये जा रहे हैं। परिवहन की धीमी गति ने बहुत ज्यादा अवकाश दिया था यद्यपि आराम कम था। संचार के साधनों की धीमी दर ने लेन-देन की अवधि को लंबा कर दिया था। पेशेवर मनोरंजन जैसे नाटक, सिनेमा, आकाशवाणी और अन्य चीजों की कमी ने लोगों को विचार करने और चिन्तन करने का समय दिया था। छोटी आबादी के ग्रामीण इलाके के बड़े जिलों में बिखराव ने कम सामाजिक सम्पर्क प्रदान किया था जो आज शहरी आबादी की भीड़ को देखते हुए संभव नहीं है।”

घरेलू उत्पादन पद्धति का नाश करके आधुनिक उद्योगवाद ने पारिवारिक संगठन को तीव्र गति से तोड़ दिया। तकनीक ने कृषि को छोड़कर मनुष्य के सारे कार्यों को घर से काफी दूर कर दिया और महिलाओं के लिए घरेलू कामों, भोजन बनाने घर की सफाई करने, कपड़े सिलने और कपड़े साफ करने को छोड़कर, सारे कामों का बोझ खत्म कर दिया। इसलिए महिलाओं के घर से बाहर आने की संभावना हुई और अपनी स्वतंत्र आमदनी के लिए कारखाने व कार्यालय में काम करना संभव हुआ। इस नये वातावरण में नारी को नया सामाजिक जीवन मिला। प्रौद्योगिकी ने मनुष्य के विचारों, व्यवहारों विश्वासों और दर्शनों को प्रभावित किया है। वैज्ञानिक खोजों और आविष्कारों ने कर्मकांडों, जाति और धर्म के प्रति हर किसी के व्यवहार को बदल दिया है। निकट भविष्य में नक्षत्र की खोज इन धारणाओं को और तेजी से बदल सकती है। यह लगता है कि आधुनिक स्त्री-पुरुष गंभीर हैं और कृत्रिम उत्तेजनाओं के प्रति ज्यादा उत्सुक हैं तथा सांस्कृतिक या आध्यात्मिक लाभों से धन उन्हें ज्यादा पसंद है। उन गुणों को जो जीवन में शीघ्र भौतिक सफलता प्रदान करते हैं, ज्यादा महत्व दिया जाता है। मनुष्य अपने दर्शन में ज्यादा व्यावहारिक हो गया है। वह कुछ भी विश्वास के आधार पर नहीं मानता। प्रत्येक विचार, धारणा या विश्वास स्वीकार करने के पहले तर्क और अनुभव की कसौटी पर कसा जाता है। दूसरे शब्दों में कार्यकारी उपयोगिता अमूर्त मूल्यों से ज्यादा आधुनिक दुनिया में मनुष्य के चिन्तन को प्रभावित करती है।

सरकार भी प्रौद्योगिकी से प्रभावित हुई है। परिवार और सामाजिक संगठन को बदलकर प्रौद्योगिकी ने सामाजिक सुरक्षा और कल्याणकारी उपायों को लागू करने के लिए सरकार को नया काम और नई जिम्मेदारी सौंपी है। आधुनिक प्रौद्योगिकी और उद्योगवाद का दूसरा सह-उत्पाद व्यापार पर सरकार का अधिक नियंत्रण है। यंत्र प्रौद्योगिकी ने बड़े औद्योगिक उद्यमों को जन्म दिया है, जो बड़े पैमाने पर उत्पादन करते हैं। इन विशाल उद्यमों के पास बहुत ज्यादा आर्थिक शक्ति है। अगर

उन्हें स्वयं पर छोड़ दिया जाय तो वे संभवतः गलत प्रतिस्पर्धा वाले व्यवहार में लग जायेंगे या एक दूसरे से मिलकर अस्वास्थ्यकर एकाधिकार करेंगे। इसलिए सरकार को जनता को इन गलत तरीकों और खतरों से बचाने के लिए कदम उठाने पड़ते हैं।

इनके अतिरिक्त और भी बहुत सारे परिवर्तन हैं जो तकनीकी परिवर्तन के कारण होते हैं। इनमें से कुछ परिवर्तनों को रेखांकित किया जा सकता है। परिवहन सुविधाओं में सुधार ने पड़ोसीपन को समाप्त कर शहरों और महानगरों को बसाया है। यही नहीं, स्थानीय लोक मान्यताओं को नजरअंदाज किया जाता है और शहरी तौर-तरीके गांवों के ऊपर हावी हो रहे हैं। प्रौद्योगिकी ने अप्रत्यक्ष रूप से प्रजातांत्रिक विचारों को बढ़ाने का ही कार्य किया है। इसने श्रम की स्थिति को पद से हटाकर ठेकेदारी को प्राधिकार के पुराने रूपों में लाकर उनमें जनतांत्रिक विचारों का संचार किया है।

वैश्वीकरण तथा बाजार– भारत में वैश्वीकरण तथा उदारीकरण की तेज रफ्तार आरंभ हो चुकी है। वैश्वीकरण तथा उदारीकरण के कारण बाजारवाद का उदय हुआ है। व्यापक पैमाने पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों को पूँजी निवेश हेतु भारत के विभिन्न हिस्सों में आमंत्रित किया जा रहा है। भारी तादाद में विभिन्न स्तरों पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रवेश भी हो चुका है। भारत गैट और डब्लू०टी०ओ० दोनों का स्थापक सदस्य है। भारत के विभिन्न हिस्सों में विकास के क्षेत्र में भारी असंतुलन मौजूद है। गिरीष मिश्रा के अनुसार भारतीय कृषि क्षेत्र को विश्व बाजार से जोड़ने की मुहिम जोरों पर है। साथ ही बहुराष्ट्रीय निगमों को कृषि क्षेत्र में प्रवेश की अनुमति दी गयी है। ‘कांट्रेक्ट फार्मिंग’ या ठेके पर खेती करने की उन्हें इजाजत दी जा रही है। इसके तहत किसानों और ठेके पर खेती करने की इच्छुक कंपनियों के बीच करार होगा। किसान अपनी जमीन उन्हें बेचने या लगान की तय पर इसके माल के लिए दे देंगे। चाहें तो ऐसा करने वाले किसान कंपनियों के फार्म पर मजदूर के रूप में काम करेंगे। गिरिश मिश्रा के अनुसार पिछले पंद्रह वर्षो के दौरान देश में क्षेत्रीय विषमता बढ़ी है। जहाँ पश्चिमी और दक्षिणी राज्य तेजी से बढ़ रहे है वहीं दूसरे राज्य कछुए की गति से रेंग रहे है। यही कारण है कि ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के निर्माण के सिलसिले में योजना आयोग ने संवृद्धि में सभी राज्यों तथा समाज के सभी वर्गों को उचित भागीदारी देने की बात की है। वैश्वीकरण ने बाजार को एक नया स्वरूप प्रदान किया है। नए दौर में समाज की विभिन्न संस्थाओं पर एक प्रकार के विचलन तथा दबाव को अनुभव किया जा सकता है। भूमंडलीकरण तथा बाजारवाद ने आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा को अधिक तीव्र किया है। सामाजिक दायरे का क्षेत्र सिमटता जा रहा है। पारिवारिक संवेदनाओं में शिथिलता उत्पन्न हुई है। दांपत्य जीवन तथा परिवार का स्नेहपूर्ण माहौल आर्थिक दबाव तथा उपभोक्तावाद को झेल रहा है। बाजार में मनुष्य की संवेदनाओं को चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है।

भारत के गाँवों में कृषि की नयी प्रविधियों का उपयोग होना आधुनिकीकरण का एक मुख्य प्रभाव है। अब अधिकांश ग्रामीण ट्रैक्टर, कल्टीवेटर, पंपिग सेटों, थ्रेसर, कीटनाशक दवाओं, उन्नत बीजों और रासायनिक खादों का उपयोग करके अपनी कृषि उपज को बढ़ाने में लगे हुए है। विकास अधिकारियों से ग्रामीणों को नयी जानकारियाँ मिलती है। पशुओं की नस्ल को सुधारने में ग्रामीण अधिक जागरूक होते जा रहे है। अधिकांश ग्रामीण अपनी फसल को सहकारी समितियों के माध्यम से बेचने का प्रयत्न करते है। इससे ग्रामीण और नगरीय समुदाय के बीच की दूरी कम होती जा रही है। चूँकि भारत एक कृषि प्रधान देश है और इसकी आत्मा गाँवों में निवास करती है। स्वतंत्रता के बाद जिस नयी राजनीतिक आर्थिक तथा शैक्षणिक व्यवस्था का विकास हुआ, उसके फलस्वरूप भारतीय समाज की संरचना में तेजी से परिवर्तन होना आरंभ हो गया। यहाँ एक ओर लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना से सामाजिक समानता, सामाजिक लाभ और सभी धर्मों के प्रति समानता को प्रोत्साहन मिला तो दूसरी ओर, नयी शिक्षा व्यवस्था से तार्किक विचारों और वैज्ञानिक आविष्कारों में वृद्धि हुई। सामाजिक और आर्थिक नियोजन के प्रभाव से लोगों के विचारों, व्यवहारों और मनोवृत्तियों में परिवर्तन होने लगे। परिवहन और संचार में वृद्धि होने से सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहन मिला। जैसे-जैसे औद्योगीकरण तथा नगरीकरण में वृद्धि हुई, गाँवों में जजमानी व्यवस्था टूटने लगी तथा सभी क्षेत्रों में जातिगत भेदभावों का प्रभाव बहुत कम रह गया।

वृद्धों की समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन किसी भी प्रकार के अध्ययन एवं के अनुसंधान की सार्थकता और उसके महत्व के आधार पर ही उसका मूल्यांकन किया जाता है। वह चाहे भौतिक विज्ञानों से जुड़े कोई वस्तु हो या सामाजिक विज्ञानों की कोई विषय-वस्तु। यह वर्तमान अध्ययन का विषय वृद्धों की समस्याएं की साक्ष्य इसकी उपयोगिता एवं सामाजिक व्यवस्था में इसका महत्व मूल रूप से इसके सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्व को बयान करती है। जैसा कि हम जानते हैं

संस्कृति की अभिव्यक्ति तीन स्तरों से वैचारिक, क्रियात्मक एवं उपलब्धि पर होती है। वृद्धों की समस्याओं की अभिव्यक्ति भी इनही स्तरों पर उपलब्ध संसाधनों के आधार पर हुई हैं। वृद्ध की समस्याओं का मूल कारण समाज में आए औद्योगिक परिवर्तन, शहरीकरण, आधुनिकीकरण है, चूंकि अंत: पीढ़ी अंतराल तो हमेशा से रहा है, परन्तु अब वर्तमान युग में जो और पीढ़ी का अंतराल देखने को मिलता है उससे तो प्रचीन काल से आ रही सामाजिक व्यवस्था को ही बदल डाला है। परिवार का स्वरूप बदल कर रख दिया है, वृद्धों को जहां श्रेष्ठता प्राप्त थी अब उस परिवार में उसी वृद्धों को बोझ समझा जाता है उसकी उपेक्षा होती हैं उन्हें इतना सताया जाता है कि वे परिवार से निकल जाए और यहाँ से वृद्धाश्रम नामी नए आवास की नींव अस्तित्व में आ गई। जहाँ परिवार में सताए हुए बुढ़े–पुराने लोग अपना आश्रय तलाश करते हुए, जा कर रहने लगते हैं।

सूचना तकनीक तथा सामाजिक अंतक्रियाओं में परिवर्तन– सूचना तकनीक के फलस्वरूप लोगों की अंतक्रियाएँ में परिवर्तन देखने को मिल रहे है। आज जैसे-जैसे कम्प्यूटर का प्रयोग बढ़ा है, लोगों के बीच हँसी-मजाक और मनोरंजन के रूप में होने वाली अंतक्रियाएँ ई-मेल पर दिए गए संदेशों और चैटिंग तक सिमटकर रह गई है। आपसी संबंधों को टेलीफोन वार्ता या कम्प्यूटर चैटिंग द्वारा ही पूरा करने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। सूचना तकनीक के विभिन्न साधनों जैसे समाचार पत्र, दूरसंचार के माध्यम से जनमत संग्रह द्वारा विभिन्न राजनीति दलों की जनता के बीच क्या स्थिति है, उसको स्पष्ट किया जा सकता है। सूचना तकनीक के द्वारा विभिन्न राजनीतिक दलों के दोशों पर नियंत्रण रखना संभव हो पाता है।

सूचना तकनीक: सकारात्मक प्रभाव:

- सूचना तकनीक ने ई-कॉमर्स, ई-गवनेंस, ई-प्रेस्क्रिप्शन, ई-आरक्षण, ई-शॉपिंग, ई-पेमेन्ट जैसी अनेक आईटी जनित सेवाओं को जन्म दिया है। अब लोग बिना समय गवाएं, बटन दबाते ही विभिन्न प्रकार की सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। अत: यह स्पष्ट है कि आईटीईएस के चलते लोगों के रहन-सहन और कार्यक्षमता के स्तर में क्रांतिकारी परिवर्तन आ गए हैं।
- सूचना तकनीक ने संचार एवं ज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रांति ला दी है। इन्टरनेट ने पारम्परिक संचार के साधनों के स्थान पर ईमेल, सोशल मीड़िया, वीडियो कांफ्रेंसिंग, ऑन-लाइन चौटिंग आदि को ला दिया है। अब स्थानों की दूरियों का महत्व समाप्त हो गया है और सारा विश्व एक वैश्विक ग्राम बन गया है। वर्ल्ड वाइड वेब ने ज्ञान के स्वरूप एवं स्वभाव में क्रांति ला दी है। अब असीमित एवं अमूल्य सूचनाओं तक आम आदमियों की पहुचं हो गई है, जबकि पहले यह कुछ चुने हुए सीमित लोगों का ही इसपर अधिकार था।
- ‘वाई-फाई’ एक और नई तकनीक है। इसके द्वारा रेडियो तरंगो पर अनेक कम्प्यूटरों को जोड़कर अनेक लोगों के बीच एक फॉस्ट इंटरनेट का लाभ उठाया जा सकता है। एक कम्पनी के भीतर इसका उपयोग कर खर्च को घटाया जा सकता है। कैफे, होटलों, हवाई लाजों, ऑफिसेज, कॉलेजेज जैसे स्थानों पर इसका प्रयोग आसानी से देखा जा सकता है।
- आईटी के उपयोग से आधुनिक समावेशी वैश्विक अर्थव्यवस्था बिना पर्यावरण को क्षति पहुंचाए स्थापित की जा सकती है।
- आईटी के चलते अब व्यापारियों एवं उद्यमियों के लिए सूचनाएं पाना, बात करना, प्रभाव डालना ओर समन्वय स्थापित करना काफी आसान हो गया है। अगर लोग कुछ समय प्रयास और धन का निवेश करने के लिए तैयार हों तो वे महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभा सकते हैं।
- आईटी ने पारदर्शिता को बढ़ावा दिया है जैसे ही कोई बात ऑन-लाइन होती है, वह आम हो जाती है। अब गुप्त बातें सत्ताधारियों के बूते के बाहर हो गई हैं, और लोग जैसे चाहें, ऐसी बातों को समाज के सामने रख सकते हैं।
- उपयोगी सूचनाएं, विचारों एवं संसाधनों वाले अन्य क्षेत्रों से भी सम्पर्क स्थापित करने में आईटी से मदद मिलती है। सम्प्रदाय, समुदाय और समूह अनुदार हो सकते हैं, लेकिन इन्टरनेट लोगों को उन लोगों से सम्पर्क स्थापित करने में मदद करता है, जो उस समस्या का समाधान कर सकते हैं, सूचनाएं दे सकते हैं और समर्थन कर सकते हैं।
- इन्टरनेट के उपयोग से गरीब एवं वंचित लोग भी बहुत लाभ उठा सकते हैं। मौसम की सही जानकारी से लेकर मछली मारने तक के काम सुरक्षित एवं समय किए पर जा सकते हैं, सही कीमत की सूचना पर फसलों की कटाई कर सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर सही मेडिकल सहायता ले सकते हैं।
- एक नई एवं प्रमुख अवधारणा यह है कि भौतिक-पृथक्करण द्वारा प्रदूषण में कमी लाई जा सकती है और ऊर्जा का महत्वपूर्ण उपयोग हो सकता है।
- इससे एक विश्व, एक गाँव की कल्पना साकार हो उठी है।

- लोगों के बीच सांस्कृतिक एवं भौगोलिक दूरी घटी है।

सूचना तकनीक: नकारात्मक प्रभाव– इसमें कोई संदेह नहीं है कि सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न कारकों में सूचना एवं संचार तकनीक आज एक प्रमुख कारक है। परंतु यह ध्यान रखना आवश्यक है कि विकास के साथ, सभी प्रयत्नों के बावजूद कुछ नई समस्याओं का प्रादुर्भाव भी हुआ है। सूचना एवं संचार तकनीक के कारण पारस्परिक संबंधों, स्वास्थ्य, सांस्कृतिक क्षेत्र और कमजोर देशों की अर्थव्यवस्था में विघटन की नई दशाएं उत्पन्न होने लगी हैं, जिसे हम इस प्रकार से समझ सकते हैं-

- सूचना तकनीक ने एक देश के भीतर रहने लोगों को दो भागों में बांट दिया है- सूचना - युक्त एवं सूचना-विहीन या कम्प्यूटर-शिक्षित एवं कम्प्यूटर अशिक्षित। इसे डिजिटल डिवाइड कहा जाता है। जिनकी पहुंच इन तक नहीं है, उनको नुकसान पहुंच रहा है और वे लोग लाभ की स्थिति में हैं जो इस प्रणाली को अपने कब्जे में रखें हुए हैं।
- सूचना तकनीक ने एक नए प्रकार के अपराध को जन्म दिया है, जिसे 'साइबर क्राइम' के नाम से जाना जाता है, जिसे रोक पाना मुश्किल है, उनको ढूंढ पाना और अपराधी को दंडित करना भी उतना कठिन है। चूंकि साइबर अपराध का स्वरूप डिजिटल है, अतः इसे ढूंढ पाना कठिन है। साइबर अपराध का सबसे खतरनाक पक्ष बाल- कामोद्दीपक चित्रों का इन्टरनेट पर प्रसार प्रचार है, जो युवा एवं नादान लोगों को ध्यान में रखकर बनाए जाते है। विश्व भर में सरकारें इसे लेकर चिंतित हैं और इसकी रोकथाम के लिए साइबर कानूनों का निर्माण कर रही हैं।
- विकासशील देशों द्वारा इंटरनेट तक पहुंचने के अभियान को एक विघ्न के रूप में देखा जा सकता है। यह इस तरह का काम है जिसे केवल तकनीकी लोग ही कर सकते है। आज लाखों लोगों की जरूरत स्वच्छ जल, पर्याप्त भोजन और आवास की है, इस पर ज्यादा ध्यान देना जरूरी है। वैश्विक अर्थव्यवस्था ज्यादा से ज्यादा इंटरनेट आश्रित होती जा रही है, जबकि 'डिजिटल डिवाइड' पोषण योग्य विकास के रास्ते में बहुत बड़ी बाधा है।
- सूचना तकनीक के माध्यम से किए जा रहे विकास कार्यों के साथ एक और समस्या जुड़ी हुई है। यह कम्प्यूटरों और नेटवर्क पर आने वाले खर्च को नजरअंदाज किया जा रहा है।
- वास्तविक समस्याओं के निदान की दिशा में उत्तम समाधान-साधन नहीं होने के बावजूद सूचना तकनीक के विकास पर अनावश्यक रूप से अधिक ध्यान दिया जा रहा है, क्योंकि यह औद्योगिक एवं कॉर्पोरेट जगत के हितों पर ही केन्द्रित है, यह एक बहुत खतरनाक स्थिति है। नवीन साइबर तकनीक विकसित करने वाले लोग समाज के कल्याण में नहीं, बल्कि बाजार को विकसित करने में रुचि रखते हैं।
- इससे भौतिकतावाद को बढ़ावा मिलता है।
- नव साम्राज्यवाद को अपना पैर पसारने का अवसर मिल रहा है।
- कम्प्यूटर के माध्यम से नये अपराध समाज में सामने आये हैं जैसे- साइबर अपराध।

निष्कर्ष :

अनेक समस्याओं के बाद भी इसमें कोई संदेह नहीं कि सूचना एवं संचार तकनीक ने एक नई सामाजिक आर्थिक क्रांति पैदा की है, जिसने विकास की प्रक्रिया को तेजी से आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। सूचना तकनीक सामाजिक परिवर्तन का एक प्रभावशाली माध्यम है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सामाजिक परिवर्तन लाने में सूचना एवं संचार तकनीक की अपनी कुछ सीमाएं हैं। लोकतांत्रिक समाजों में सूचना एवं संचार तकनीक सामाजिक परिवर्तन लाने में प्रभावशाली भूमिका निभा रहा है।

संदर्भ :

1. सुकन्या दास, 2020, परिवर्तन और विकास का समाजशास्त्र, लक्ष्मी प्रकाशन, नई दिल्ली
2. ऑगबर्न, 1922, सोशल चेंज, मैकमिलन, लंदन
3. सुकन्या दास, 2020, परिवर्तन और विकास का समाजशास्त्र, लक्ष्मी प्रकाशन, नई दिल्ली
4. गिडेन्स, एंथोनी, 1990, द कन्सीक्युन्स ऑफ मोर्डनीर्टी, पोलिटी, कैम्ब्रिज
5. श्यामाचरण दुबे, 2013, विकास का समाजशास्त्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली